स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त पारिवारिक जीवन एवं संषर्घ

डॉ0 रवीन्द्र कुमार सिंह
शोध–निर्देशक
सहायक आचार्य/विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0)

बृजेश कुमार यादव
शोधार्थी
हिन्दी विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश –

'दोहरा अभिशाप की कौसल्या बैसंत्री के माता–पिता नागपुर की एम्प्रेस मिल में काम करते थे माँ धागा बनाने वाले विभाग में काम करती थी और पिता मशीनो में तेल डालने का काम करते थे। इस परिवार में कौसल्या की माँ, पिता, एक भाई और वे पाँच बहनें एक साथ रहा करते थे। यह परिवार एक दलित परिवार था। इस परिवार में स्त्री भी पुरुष के साथ काम किया करती थी। परिवार में बेटे की चाह से पाँच बेटियों का जन्म हुआ था फिर भी बेटे की अपेक्षा की जाती थी। कौसल्या की माँ बेटियों के बाल धोते वक्त बड़बड़ाती रहती थी ''देवा, मैंने ऐसा कौन–सा पाप किया था कि मेरे नसीब में लड़कियाँ ही लिखी है?''[1] निष्कर्षतः स्पष्ट है कि 'दोहरा अभिशाप' की कौसल्या बैसंत्री के पिता का परिवार आर्थिक दृष्टि से ठीक–ठाक था किन्तु नारी के प्रति देखने का दृष्टिकोण गौण दिखाई देता है। नारी भी नारी को गौण समझती रही है।

मुख्य शब्द–अभिशाप,परिवार,दृष्टिकोण,माता–पिता,आर्थिक दृष्टि

****

'बूँद बावड़ी' की पद्मा सचदेव के पिता उच्चशिक्षित थे। उन्होंने लाहौर से डबल एम0ए0, एल0एल0बी0 की थी। वे मीरपुर कॉलेज में प्रोफेसर थे। पिता अच्छे खासे समृद्ध परिवार से थे। यह एक ब्राह्मण परिवार था। उन्हें सभी लोग पहाडी वाले पंडित (ढक्का वाले पंत) कहते थे। पद्मा की माँ एक सीधी–सादी महिला थीं। इस परिवार में पद्मा की माँ–पिता तथा दो भाई आशुतोष और श्रीकान्त एक साथ रहते थे। इस परिवार में पितृसत्ताक पद्धति थी। स्त्रियों को पदमा की माँ तथा दादी आदि को अपने निर्णय लेने का अधिकार नहीं था। परिवार में लड़का–लड़की जैसा भेद–भाव नहीं था। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि 'बूँद–बावड़ी' की पद्मा सचदेव के पिता का परिवार आर्थिक दृष्टि से समृद्ध था। परिवार में नारी के लिए मान था पर उन्हें निर्णय लेने का अधिकार नहीं था।

'कस्तूरी कुंडल बसै' की मैत्रेयी पुष्पा के पिता माँ के साथी जैसा व्यवहार करने लगे थे। फिर भी उनकी घर के प्रति गैर–जिम्मेदारियाँ घटी नहीं थी, बढ़ती ही जा रही थीं। क्योंकि शादी के बाद वे घर की जिम्मेदारी निभाने की बजाय घर से भाग गये थे और घर की जिम्मेदारी मैत्रेयी पुष्पा की

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 11Issue:7inJuly-2022https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2022 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

माँ को ही सँभालनी पड़ी थी। मैत्रेयी पुष्पा अठारह महीने की थी तभी उसके पिता हीरालाल गुजर गए। इस परिवार में मैत्रेयी पुष्पा की माँ तथा अपाहिज दादाजी रहते थे। परिवार में कोई शिक्षित व्यक्ति नहीं था। मैत्रेयी पुष्पा के पिता के बाद घर की जिम्मेदारी माँ पर ही आ गई थी। माँ ने दूसरे गाँव में जाकर अपनी पढ़ाई पूरी की थी और सरकारी नौकरी करके परिवार को सँभालती थी। यह परिवार ब्राह्मण उपाध्याय गोत्र का था। पिता के गुजर जाने के बाद इस परिवार में मातृसत्ताक पद्धति दिखाई देती है। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि कस्तूरी कुंडल बसै' की मैत्रेयी पुष्पा के पिता के गुजर जाने से माँ को ही परिवार की जिम्मेदारी सँभालनी पड़ती है। अतः इस परिवार में नारी स्वयं निर्णय लेती नजर आती है।

'जो कहा नहीं गया' की कुसुम अंसल के पिता ज्यादा से ज्यादा वक्त अपने व्यवसाय में बिताते थे। कुसुम जब दस महीने की थी तभी उसकी माँ गुजर गई थी। इस परिवार में कुसुम के पिता, दादाजी, दोनों भाई विनोद–प्रमोद और बुआ जी के बेटे दीपक तथा विमला बुआ आदि रहते थे। यह परिवार एक समृद्ध व्यापारी परिवार था। इस परिवार में पितृसत्ताक पद्धति थी कुसुम के जीवन मे एक उलझाव–सा दिखाई देता है। सब लड़कियों की एक माँ होती है और कुसुम की तीन। सब लड़कियों के एक पापा होते हैं पर कुसुम के पापा दो थे। इनके घर के वातावरण में एक नियंत्रण था। सब कुछ बाकायदा, पत्ता भी अगर गिरने को सोचता तो उसे भी सलीके से गिरने का स्थल तलाशना होता ऐसा ही नजर आता है। जब कुसुम दस महीने की थी तभी उसकी माँ गजर गई थी। उनके 'साकेत' के एक कमरे में एक बड़ी–सी तस्वीर थी, जो कुसुम के माँ की थी। लेकिन कुसुम और उसके भाई उस तस्वीर के सामने खड़े होते तो घर के नौकर उन्हें कहते अगर तुम्हारी नई माँ ने तुम्हें यहाँ देखा तो वह तुम्हारी बहुत पिटाई करेगी। वह कमरा उसके लिए और भाई के लिए वर्जना का स्थल बन कर रह गया था। कुसुम के पिता ने दूसरी शादी कर ली थी। कुसुम को उनके पिता ने अपने पास भी नहीं रखा था पिता की बहन यानी कुसुम को बुआ ने उसे गोद ले लिया था। वह बेऔलाद थी। इसीलिए कुसुम के दोनों बड़े भाई विनोद–प्रमोद और बुआ जी का बेटा दीपक ये सभी एक साथ ही रहते थे। दादा जी की दिनचर्या सुबह से आरम्भ होती थी। दादाजी पता नहीं कब उठते थे पर ये सब बच्चे जब उठते तो उन्हीं के कमरे से उनका स्वर आता उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहीं जो सोवत है, जो सोवत है तो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।''[2] प्रभात का यह पहला स्वर भी तो खोने और पाने की रहस्यमयता रचता और सन्नाटे के झुटझुटे में आ मिल जाता था। फिर एक अदृश्य–सा भय हाथ साधता और उन सबको यज्ञशाला तक पहुँचा देता था। दादाजी सस्वर मंत्रों का पाठ करते थे और कुसुम तथा भाइयों को भी आँखें मूँदकर वह सब दोहराना पड़ता। वे भजन भी गाते थे ''यज्ञ रूप प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये, छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए।''[3]

दादा जी अक्सर बताते कि उन्हीं की दादी के पिता रोपड़ गाँव में रहते थे और वे आर्य समाजी थे उन्होंने अपने बेटियों और बेटों को बी0ए0 तक शिक्षा दी थी। उनकी दादी ने ही अलीगढ़ के आर्य समाज की भी स्थापना की थी। वह स्वयं सस्वर भजन भी गाती थी। भाषण भी देती थी। बहुत वर्ष जीना दादी के नसीब में न था और वह प्लेग की बीमारी में स्वर्ग सिधार गई थी। तब दादाजी ने दूसरा विवाह नहीं किया। उन्होंने ही अपनी तीनों बेटियों और कुसुम के पापा को बहुत कठिनाइयों के साथ पाला, बड़ा किया था। वे विलायत से बैरिस्टरी पास करके आए थे। उन्होंने अपने चार साल के प्रवास में कभी भी नमक, अंडा तक नहीं खाया था। दादा जी का निरामिष भोजन पर ही विश्वास था। उनका चेहरा भव्य था पूरा व्यक्तित्व जैसे एक दर्पण जैसा दमकता था । उनकी आवाज इतनी रोबीली

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 11Issue:7inJuly-2022https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2022 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

थी कि साकेत की पक्की दीवारों को भी हिला सकती थी। उनकी छाया पूरे परिवार पर एक वितान–सी तनी रहती थी। उनकी इच्छा के बिना घर में कोई कार्य सम्पन्न नहीं होता था यहाँ तक की अगर बचपन में डॉक्टरों द्वारा दिया गया 'शार्क फिरौयल' यानी मछली का तेल होने के कारण फिंकवा दिया जाता था। उन्हें पीने को नहीं दिया जाता था। उसके स्थान पर घर का दूध, दही, घी आदि दिया जाता था। कुसुम और भाइयों की सारी परवरिश का बोझ दादा जी के ही सिर पर था। जैसे बच्चों का उठना–बैठना, खाना–पीना सब दादाजी ही देखा करते थे। परिवार में स्त्रियों को निर्णय लेने की स्वतंत्रता नही थीं, किंतु दादा जी के परिवार में लड़का–लड़की में भेदभाव नहीं था। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि जो कहा नहीं गया की कुसुम अंसल के पिता का परिवार एक संपन्न परिवार था। परिवार में नारियों को स्वयं निर्णय लेने से वंचित रहना पड़ता था।

'आला आँधारि' की बेबी हालदार के पिता सेना की नौकरी करते थे। जम्मू–काश्मीर में किराए के मकान में रहते थे। बेबी की माँ अशिक्षित थी। वह घर में ही काम करती थी। बेबी का परिवार मुर्शिदाबाद में कुछ महीने रहता था। बाद में वे डलहौजी रहने के लिए आए थे। वे वहीं पर रहने लगे थे। बेबी के घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी इसीलिए माँ को घर खर्च चलाना कठिन हो जाता था निष्कर्षतः स्पष्ट है कि 'आलो आँधारि' की बेबी हालदार के पिता का परिवार आर्थिक दृष्टि से ठीक नहीं था। घर खर्च चलाने में कठिनता दिखाई देती है।

विवेच्य आत्मकथाओं के परिवार का स्वरूप देखने के उपरांत निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कुछ समस्याओं के बावजूद भी सभी आत्मकथाकारों का पैतृक परिवार सुखमय परिलक्षित होता है। लेकिन पुरुष परम्परा यहाँ पर भी दिखाई देती है।

विवेच्य आत्मकथाओं में नारी के बचपन का जीवन विविधताओं से परिपूर्ण नजर आता है। 'लाहौर से लखनऊ तक की प्रकाशवती का बचपन लाहौर में गुजरा था। उस वक्त लाहौर की अपनी एक संस्कृति थी। प्रकाशवती जिस मुहल्ले में रहती थी वहाँ भाईचारा, दुख–सुख के साथी हमदर्द थे। प्रकाशवती अपने माँ के अनुशासन म पली बड़ी हुई थी। पिता की वह सबसे प्यारी बेटी थी। बचपन में प्रकाशवती अपनी गलियों में सहेलियों के साथ खेलती थी। उन्हीं के साथ पढ़ाई–लिखाई करती थी। इसके प्रकाशवती घर के कामों में माँ की सहायता करती थी। प्रकाशवती के माता–पिता ने कभी–भी लड़का–लडकी में किसी तरह का भेद नहीं किया था। वे दोनों को एक ही जैसी छूट देते थे।

प्रकाशवती का बचपन लाहौर में गुजरा है। उनकी गली में लगभग दो सौ घर थे। व्यापारी, नौकरी पेशा लोग, वकील, डॉक्टर, क्लर्क, कारीगर आदि सभी वर्ग के लोग थे। पुरुष अपने काम पर चल जाते और बच्चे स्कूल जाते थे। घरों की औरतें घर के काम खत्म होने पर अपने मकानों के चबूतरों पर तथा गली में आ बैठती। बच्चे दोपहर बाद गली में इकट्ठे हो जाते थे। लाहौर का जीवन विभाजन के साथ ही खत्म हुआ।

बचपन में प्रकाशवती अपनी गलियों में सहेलियों के साथ खेलती थी. पढ़ती थी। माँ के अनुशासन में ही प्रकाशवती पली और बड़ी हुई। इसके अलावा वह घर का काम लगन से करती थी। इनका परिवार अच्छा–खासा तथा समृद्ध था। उनका परिवार बेहद बड़ा तथा रूढ़िवादी होते हुए उदार था। यहाँ पर पर्दा नहीं किया करते थे। लड़के–लड़कियों में अंतर नहीं था। यह परिवार अपने बच्चों

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 11Issue:7inJuly-2022https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2022 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

को पढ़ाने में विश्वास रखने वाला था। लेकिन उच्च शिक्षा की आकांक्षा लड़कियों में नहीं थी। लड़कियों को अकेले जाने में, घूमने–फिरने में कोई भी पाबंदी नहीं थी। घर के सभी सदस्य एक साथ रहते थे।

प्रकाशवती का बचपन बेहद हँसी–खुशी में गुजरा है। मुहल्ले के परिवारों की लड़कियाँ इकट्ठी होकर ही स्कूल जाती थीं। स्कूल से लौटते समय एक पैसे के दो गरमा–गरम आलू, गोभी या बैंगनों के पकौड़े या आचार का एक टुकड़ा वे ले आती थी। आचार की खुशबू से प्रकाशवतो के मुँह में पानी आता था। स्कूल से आते ही घर में अपने आप वह रसोई से सुबह की पकी रोटी लेकर खिड़की में झाँकती हुई खा लेती थी। माँ को पता भी नहीं चलता कि उन्होंने क्या खाया और क्या नहीं खाया। लेकिन माँ को यह भी पता था कि उनकी बेटियाँ अपने खाने व पढ़ाई की चिंता स्वयं ही करती हैं। स्कूली का सारा होम वर्क करने के बाद प्रकाशवती हम उम्र लड़कियों के साथ मुहल्ले में खेलने के लिए जाती थी। उनका सबसे प्यारा खेल था– 'फूलों में हम आते हैं ठंडी मौसम में। फिर वे छोटे रबड़ की गेंद का क्रम टूटे बिना खेलते हुए थाल डालती थी। फिर वे लुकन मीटी का खेल खेलती थी। ये सभी लड़कियाँ अपने घरों में छुप जाती थीं। एक लड़की छिपे चोर को पकड़ कर लाती, इस खेल में किसी एक को पकड़ना बहुत जरूरी होता था। उनके बचपन की ऐसी अनेक बातें उल्लेखनीय हैं। उनके घर में बिजली नहीं थी। उनकी गली में जब बिजली आयी तब प्रकाशवती ग्यारह बारह वर्ष की थी और उसकी छोटी बहन का जन्म हुआ था। उसके पिता ने घर पर बिजली का तार खिंचवाया था। भादों का महीना होने से वह एक टेबल फैन खरीद कर लाए थे। पहले उनके घर में बैठक में हाथ से खींचने वाला चटाई का पंखा था। घर के बच्चे बारी–बारी से हवा के लिए उसे खींचते रहते थे। वह सब बच्चे हरीकेन लैम्प की रोशनी में पढ़ते बैठते थे। रात के वक्त जब माता–पिता छोटे भाई–बहन अपने सोने के कमरे में चले जाते थे तब वे सब बड़े भाई–बहन पढ़ते थे या गप्पें लगाते थे तथा खूब गंडिरियाँ चूसते, रियोढ़ी–गजक और चिलगोजे छीलकर खाते रहते थे। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि प्रकाशवती का बचपन अत्यंत मजे में बीत गया है।

'कूड़ा–कबाड़ा' की अजीत कौर के परिवार में माता–पिता और स्वयं अजीत इतने ही लोग रहा करते थे। अजोत का बचपन एकाकीपन से गुजरा 'कूड़ा–कबाड़ा' की अजीत कौर के परिवार में माता–पिता और स्वयं था। क्योंकि अजीत की माँ गर्भवती थी। अजीत के पिताजी माँ की देखभाल में थे। अजीत की तरफ किसी का भी ध्यान नहीं था। जब अजीत को भाई हुआ तो परिवार के लोग उसी के आने की खुशियाँ मनाते थे। अजीत अपने अकेलेपन में दिन बिताती थी। परिवार में अजीत के पिताजी का ही आदेश चलता था। अजीत की माँ उन्हीं के कहने में हाँ में हाँ मिलाती थी। पिताजी लड़की को पढ़ाने में विश्वास नहीं रखते थे। उन्हें लगता था कि लड़कियाँ स्कूल जान से बिगड़ जाती हैं। अजीत को पढ़ना तथा स्कूल में जाना अच्छा लगता था, मगर पिताजी यह नहीं चाहते थे। उन्होंने उसे पढ़ाने के लिए घर में ही मास्टर बुलवाया था। वह रोज सवेरे पढ़ाने के लिए आता था। कभी वह अजीत को अंग्रेजी पढ़ाता तो कभी गणित। उस वक्त शायद इन्हीं दो विषयों की जानकारी लड़कियों को देते थे, किंतु गणित अजीत ने कभी रुचि से सीखा नहीं। जैसे वह अंग्रेजी पढ़ाता था उसी तरह अजीत सीख जाती थी। मध्य वर्ग में आमतौर पर जैसे औरतें बोलती हैं उसी तरह अजीत ने अंग्रेजी सीख ली थी। परिवार में नारी को अपनी बात कहने का अधिकार नहीं था। अजीत की मां पुराने विचारों की थी। वह पिताजी का कहना मानती थी। अजीत की माँ सारा दिन मालिश ही करवाती रहती थी। या फिर अपने छोटे नवाब याने जसबीर को दुलारती रहती थी। जसबीर को उन्होंने बड़ी मनौतियाँ मान–मानकर

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 11Issue:7inJuly-2022https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2022 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पाया था। जसबीर को सभी प्यार से घुग्गी बुलाते थे। जसबीर की देखभाल के लिए घर में आया रखी थी। पूरे घर में घुग्गी–घुग्गी ही था। अजीत की तरफ किसी का ध्यान ही नहीं था। घर की सल्तनत में माँ का शुरू से ही कोई ज्यादा हस्तक्षेप नहीं था। जसबीर के जन्म के बाद माँ की टाँगों को पता नहीं क्या हो गया था। वह चलने फिरने को भी मोहताज हो गई थी। शीलादाई रोज उसे देखने के लिए भी आती थी। एक कम उम्र की नर्स भी शीलादाई ने भेज दी थी। वही माँ को नहलाती–धुलाती, स्पंज कर पूरे बदन पर पाउडर छिड़कती, उनके कपड़े बदलती तथा बाल भी बनाती। अजीत की माँ जब ज्यादा बीमार होती तो वह जसबीर को नहलाती धुलाती, कपड़े बदलकर छोटी–सी सफेद चादर में लपेटकर उसे माँ के पास लिटा देती थी। माँ अपने आँचल में छिपाकर उसे दूध पिलाती थी।

अजीत को लगता था कि जिस बच्चे ने माँ को इतना कष्ट दिया है। उसे वह कैसे इतना प्यार कर लेती है। अपनी छाती से लगाकर दुपट्टे से अच्छी तरह ढँककर दूध भी पिला लेती है। उसे गोद में लेते ही उनके चेहरे पर की सारी उदासी गायब हो जाती है। अजीत भी जसबीर को बहुत प्यार करती थी। सुबह जब अजीत को पढ़ाने के लिए मास्टर आते तो अजीत को उसका गुस्सा आता था। उसे हर वक्त लगता कि अगर मास्टर आने से इनकार करते तो शायद पिताजी को मुझे स्कूल भेजना ही पड़ता। अजीत मास्टर जी से कुछ सीखना नहीं चाहती थी। कई दिन तक मास्टर जी अजीत को पहाड़ा सिखाने में भी सफल न हो सके तो एक दिन आँगन के बीचों–बीच बने बड़े–से खुरे नाली के आगे रखा बड़ा सा टब घसीट कर मास्टर अजीत से कहने लगे – ''मैं की इस मोरी में सिर घुसाकर जान दे दूँगा अगर तूने पहाड़ा याद नहीं किया।''[4] इस बात से अजीत बहुत डर गई थी। उसे लगने लगा कि सचमुच मास्टर जी ने जान दे दी तो क्या होगा? फिर अजीत ने पहाड़ा याद कर लिया। बाद में अजीत ने दस तक पहाड़े याद कर लिए थे। थोड़ा–बहुत जोड़ना–घटाना भी आ गया था। अंग्रेजी की पहली पुस्तक 'नेलसँन रीडर' भी अजीत ने पढ़ ली थी। अजीत ने साल भर में सब सीख लिया था। फिर एक अजीब–सी घटना घटी। दस के बाद पहाड़े अजीत को याद ही नहीं होते थे। तेरह के पहाड़े से अजीत खास चिढ़ती थी। मास्टर जी ने अजीत को अपनी गोद में बिठाकर, प्यार से बहला फुसलाकर पहाड़े याद करवाने की कोशिश की।

निष्कर्ष –

अन्त में हम निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री का पारिवारिक जीवन बहुत ही संघर्ष भरा रहा है–जैसे– पहाड़ टूट पड़ा हो, भूचाल आ गया हो। उन्होंने अजीत की बाँह पकड़ कर उसे घुमाकर दूर फेंका और मास्टर को बहुत पीटने लगे। मास्टर को रुई की तरह धुन कर पिताजी ने उन्हें सीढ़ियों से लुढ़का दिया था। इस तरह अजीत की पढ़ाई खत्म हो गई। इसके बाद ही पिताजी ने रायसाहब से सलाह–मशवरा किया और अजीत को सेक्रेड हार्ट स्कूल में दाखिला करवा दिया। एक स्त्री थी जो अजीत को घर से स्कूल और स्कूल से घर लेकर आती थी। इस स्कूल के एक–डेढ़ वर्ष के दिन अजीत के बचपन के सुखद दिन रहे हैं। निष्कर्षतः कहना होगा कि अजीत कौर का बचपन अकेलेपन से ही गुजरा है। पढ़ने की चाह होने पर भी वह अधिक समय तक स्कूल नहीं जा सकी।

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 11Issue:7inJuly-2022https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR
Copyright (c) 2022 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ

1. कौसल्या बैसंत्री, दोहरा अभिशाप, पृ०–12.
2. कुसुम अंसल, जो नहीं कहा गया, पृ०–20.
3. वही, पृ०–20.
4. अजीत कौर, कूड़ा–कबाड़ा, पृ०–19.

ISSN2277-3630(online),Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 11Issue:7inJuly-2022https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR

Copyright (c) 2022 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY).To viewacopyofthislicense, visithttps://creativecommons.org/licenses/by/4.0/